प्रेस विज्ञप्ति

आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति

सरदारशहर 331 401

Email : terapanthpr@gmail.com * Fax : 01564-220 233

आत्मा की शुद्धि के लिए आसक्ति को छोड़ें: आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 1 जून, 2010

कुछ लोग ऐसे होते हैं जो अपने जीवन के बारे में ठीक तरह सोच नहीं पाते हैं, जो अचिंतनशील होते हैं वे ये नहीं सोचते कि हमें आगे कहीं जाना है वे तीव्र आसक्ति वाले व्यक्ति हाते हैं। यह शरीर अनित्य है इसलिए शरीर का आत्मा के हित के लिए लाभ उठाना चाहिए।

उक्त विचार आचार्य महाश्रमण ने नाहटा निवास पर धम्मपद और उत्तराध्ययन के तुलनात्मक प्रवचन में व्यक्त किये।

आचार्य महाश्रमण ने कहा कि आत्मा एक शरीर से दूसरे शरीर में जाती है। जो व्यक्ति जन्म लेता है तो उसके लिए मृत्यु निश्चित है। यह एक श्रृंखला है जिसमें आत्मा भ्रमण करती रहती है। उन्होंने आत्मा को सबसे लंबी यात्रा करने वाला बताते हुए कहा कि आत्मा मनुष्य जन्म से स्वर्ग में चली जाती है तो कभी नरक में चली जाती है और कभी स्वर्ग से मनुष्य लोक में आ जाती है। मनुष्य को आत्मा की शुद्धि के लिए आसक्ति को छोड़ने का प्रयास करना चाहिए।

एक आदमी देखता हुआ भी काम, लोभ, मोह में अंधा हो जाता है, सत्संग, प्रवचन आदि में भाग लेने से आदमी में हृदय परिवर्तन हो सकता है आदमी के भीतर विभिन्न प्रकार की वृत्तियां होती है उन वृतियों का आदमी परिष्कार करे, उसे अपनी वृतियों को बदलने का प्रयास करना चाहिए।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ एक प्राणवान धर्मसंघ है, संघ के प्रत्येक सदस्य में संघ निष्ठा की भावना है, संघ निष्ठा के कारण ही तेरापंथ धर्मसंघ ढाई सौ वर्षों से ऊंचाईयों की ओर अग्रसर है।

इस अवसर पर साध्वी सोनांजी के देवलोकपरांत स्मृति सभा का आयोजन हुआ जिसमें साध्वियों ने अपने विचार रखे व चार लोगस्स का ध्यान किया गया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार ने किया।

शीतल बरड़िया
(मीडिया संयोजक)